REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

मूलीबाइ सार्वजनिक महिला पुस्तकालय और महिला मंडल

डा. मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

❊ सारांश :

महिला मंडल और मूलीबाइ सार्वजनिक महिला पुस्तकालय की स्थापना इ.स.१९३० में हुई थी। यह संस्था पाटण की पहली संस्था थी जो महिलाओ के साथ जुडी हुई थी।

इस संस्था की स्थापना २६ जनवरी, १९३० के रोज ज्ञानबाइ प्रसुति गृह के लेडी डाक्टर मि.स.डी.एच.बा. के प्रमुखपद पर और श्री मनाबेन यजमशीभाइ मोदी के शुभ हाथो से एक महिला मंडल और पुस्तकालय की स्थापना की थी। इस मंडल के प्रमुख पद पर मिस बाना उसके बाद उनके अनुगामी डा.मि.स.जी.एम.बिमये आये थे। उनके साथ मंत्री के तौर पर श्रीमती मोतीबेन चीमनलाल परीख ने संस्था के प्रमुख पद पर रहकर संस्था का विकास किया था। प्रमुख शीलाबेन ए. परीख, उपप्रमुख शर्मिष्ठाबेन अेम. खमार, मंत्री चारुबेन डी. छाटबार और सहमंत्री के तौर पर उर्वशीबेन अेस. चोक्सी ने अपनी अमूल्य सेवा दी थी। इस संस्था का वहीवट सिफ स्त्रीओ द्वारा ही किया और स्त्रीशकित को आगे लाने के लिए प्रयत्न होते थे। इस संस्था में स्त्री प्रतिनिधित्व द्वारा संस्था का वहीवट होता था।[१]

❊ स्थापना और विकास :

उस समय पाटण में एक पुस्तकालय परिषद भरने का तय हुआ। उस समय महिला पुस्तकालय पाटण में न था इस खामी को दूर करने के लिए दिनांक : २-१-१९३० को रोज एक महिला पुस्तकालय की स्थापना करने में आयी। उस समय स्त्रीओ के सर्वदेशीय विकास के लिए पुस्तकालय सीमित न था। इसलिए एक स्त्री संगठन की भी जरुर पडने लगी और दिनांक : २६-१-१९३० के रोज महिला मंडल की स्थापना की। शुरु में संस्था के पास अपना मकान न होने की वजह से सोनीवाडा में आया हुआ किन्डर-गार्डन स्कूल में यह पुस्तकालय चलता था। उसके बाद तीनेक साल के बाद श्री मूलीबाइ ट्रस्ट की ओर से रु.७००० का दान मिला उसमें महेसाणा पंचायत ने रु.७००० और श्रीमंत गायकवाड सरकारश्री के रु.७००० उमेर कर कुल रु.२१००० की रकम में से संस्था का मकान बनाया। इस पुस्तकालय का नया मकान बाजार की बीच में बाबु के बंगले के सामने आज भी आया है और उसमें विविध प्रवृत्तियाँ की जाती है।

यह महिला मंडल को गांधी रसिकलाल चंदुलाल तरफ से उनकी माता मूलीबाइ के नाम से संस्था को दान मिला था। इसलिए इस संस्था का नाम ''श्री मूलीबाइ सार्वजनिक महिला पुस्तकालय'' नाम दिया गया था।

उस समय स्त्री और बच्चो में पढने की धगश कम थी और जो धगश थी तो सुविधा न थी। वहाँ इस धगश को रखने के लिए संस्था के सभ्य घर घर जाकर बहनो को पढाने लगते और शिक्षको द्वारा वोलन्टरी सर्विस आता और हरेक मोहल्ले लायब्रेरी द्वारा घर घर पुस्तक भेजकर महिलाओं की वांचन की भूख जगाने में आती थी।[२]

❊ महिला पुस्तकालय और उसकी प्रवृत्तियाँ :

महिला मंडल द्वारा महिला पुस्तकालय भी चलाने में आते थे। इस महिला पुस्तकालय की स्थापना दिनांक : २-१-१९३० के रोज की थी।

वांचन द्वारा विचार मिलते है। वांच मानसिक केलवणी और संस्कार घडतर का रथ है। भुदान प्रणेता श्री विनोबाजी बताते है कि,

''वांचन एक शक्ति है तो वांचन विचार को विकसाने का केन्द्र बीज है।''

जबकी वांचन क बारे में वैज्ञानिक अेडिसन कहते है कि...

''कसरत से जो लाभ शरीर को मिलता है वह लाभ वांचन से मगज को मिलता है।''

बदलते समाज और दुनिया की माहिती लेने के लिए वांचन जरुरी है। यह जानकर इस महिला मंडल ने वांचनालय की प्रवृत्ति शुरु की थी। इस पुस्तकालय का संचालन पाटण की स्त्रीओ द्वारा ही किया था।

दिन-प्रतिदिन उसका विकास होने लगा और पाटण की ज्यादा से ज्यादा स्त्रीयाँ पुस्तकालय का लाभ लेती थी। शुरु के सालो में चलती-फिरती लायब्रेरी (मोबाइल लायब्रेरी) द्वारा घर पर पुस्तक पहुँचाये जाते थे।

यह पुस्तकालय स्त्रोयों के साथ साथ बच्चो के लिए बाल पुस्तकालय भी चलाते है। जिसमें बच्चो के लिए ८१८ पुस्तक दो अठवाडिक, एक पाक्षिक और दो मासिक भी मंगाये जाते है। जिसमें एक मिनिट की रमत, वार्ता कहने की स्पर्धा, दिवाल पर चित्रलेखन जैसी स्पर्धाएँ आज भी की जाती है। जबकि महिलाओं के लिए भी पुस्तक उपरांत दो दैनिक, चार अठवाडिक, चार पाक्षिक और चार मासिक सामयिक भी मंगवाये जाते है और पुस्तकालय के साथ साथ महेंदी स्पर्धा, बाल-गूंथने की स्पर्धा, संगीत वाचको को अनुकूल ११ से ६ का रखा गया है और इस पुस्तकालय में महिलाओ के लिए वार्षिक सभ्य फो रु.३० रखा गया है। इस पुस्तकालय में विविध भाषाओं के २७३७ पुस्तकों का संग्रह था उसमें गुजराती में २४३७, मराठी में २१० और हिन्दी में ४९, अंग्रेजी में ४० पुस्तक थे। अभी के समय इस पुस्तकालय में ५००० पुस्तकों का समावेश होता है।[३]

❊ बालवाडी :

महिला मंडल द्वारा बालको के विकास के लिए भी प्रवृत्तियाँ की है कारण के आज का बालक भविष्य का नागरिक है। समाज का नवनिर्माण और उत्कर्ष का आधार बालको के उत्कर्ष पर रहा है।

बच्चो को बचपन से ही अच्छे संस्कार, शिक्षण मिले इस हेतु से इस संस्था द्वारा एक बालवाडी का आयोजन किया था। बच्चो को गम्मत आये, ज्ञान मिले उसके लिए गम्मत अलग-अलग साधनों की मदद से उनकी शक्ति का विकास हो और बच्चो को पोषण मिले इसके लिए हररोज गरम पौष्टिक नास्ता भी दिया जाता था। साथ साथ रमतगमत की हिरफाइ द्वारा भी बच्चो में शारीरिक शक्ति खीलती, खेलदिली सिंचने के भी प्रयास किये जाते थे और उस समय डॉ.हिंमतभाई झवेरी द्वारा बच्चों की मफत शारीरिक तपास भी कि जाती थी। इस बच्चो के विकास के लिए भी यह संस्था द्वारा प्रयास किये जाते थे।[४]

❊ शिवण वर्गो-भरत कामना वर्गो :

आज के युग में महिलाओ की भी सामाजिक जीवन में महत्व की भूमिका होती है। स्त्री एक माता है साथ साथ गृहजीवन की अधिनकात्री है। आज के आर्थिक जीवन की बढती जवाबदारीओं में पुरुषों को साथ देने का कार्य भी करना पडता है। स्त्री भी पुरुषों को आर्थिक प्रवृत्तियों में मदद करे उसके लिए भी महिला मंडल द्वारा प्रवृत्तियाँ की थी।

इस संस्था द्वारा टेनिकल शिक्षण बोर्ड तरफ से तीन वर्षीय अभ्यासक्रम का टीचर ट्रेइनींग का कोर्स चलाने में आता था। यह अभ्यास पूर्ण होने के बाद सर्टिफिकेट भी दिया जाता था। अभ्यासक्रम प्राप्त की हुई बहने दूसरी शैक्षणिक संस्था में नोकरी ले शके और यह अभ्यासक्रम गुजरात राज्य टेकनिकल अेज्युकेशन बोर्ड द्वारा चलाया जाता था।

इ.स.१८८५-८६ के साल में रोजगार तालीम योजना तले इन्डकशन टेलरींग वर्ग का आयोजन किया था। उसमें १६ से २१ साल की बहनो को तालीम दी जाती थी और शिवण काम शिखाया जाता था। शिवणकाम उपरांत भरतगूंथण के वर्ग भी चलाये जाते थे। घरगथ्थु जीवन की दैनिक जरुरियाते जैस की टेबल-क्लोथ, बटवा, वोल-पीसीस, खिलौने, नेट की किनारें, उन के गूंथे स्वेटर्स, गृह सुशोभन की वस्तुऐ बनाने का शिखाया जाता था।

❊ सांस्कृतिक-सामाजिक प्रवृत्तियाँ :

मंडल की बहने एक-दूसरे के नजदीक आए, एक-दूसरे से परिचित हो इस हेतु से हर साल एक यजणी तथा पाटण की बहार प्रवास का आयोजन किया जाता और हर साल आसो सुद-१२ के रोज गरबे का भी आयोजन किया जाता और महिला मंडल की बहने उसमें भाग लेती और गरबे गाकर आनंद प्राप्त करती थी और समूह में नास्ता भी करते थे।

❊ घोडिया घर :

महिला मंडल द्वारा घोडिया घर भी चलाया जाता था क्युं कि वह चलाने के पीछे उनका हेतु ऐसा था कि कम आवक वाले कुटुंबो को बहने अपने बच्चा को घर पे रखकर आर्थिक प्रवृत्ति करने बहार जाय तो उनके बच्चो को रखने के लिए कोई न हो तब मुश्कील होती थी। इसलिए ऐसे कुटुंबो के लिए महिला मंडल द्वारा एक घोडिया घर बनाया जिसमें १ मास से ६ साल तक के बच्चो को रखा जाता और उनकी फो भी ली जाती थी।[५]

❊ संदर्भ सूचि :

१. मूलीबाइ सार्वजनिक महिला पुस्तकालय और महिला मंडल स्मृतिग्रंथ (१९३०-१९८७), प्रकाशक : श्रीमती चारुबेन डी. छाटबार मंत्री महिला मंडल, इ.स.१९८७, पृ.६-७

२. ओझा कोमल जी., ''पाटण के आर्थिक और शैक्षणिक विकास में नगर श्रेष्ठीकों का फाला'', केस स्टडी एम.फिल. विभाग, हेम. उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी, पाटण, इ.स.२०११-१२, पृ.३२

३. श्री पाटण जैन मंडल ''सुवर्ण ज्यंति महोत्सव अंक'', प्रकाशक-श्री पाटण जैन मंडल, पाटण, इ.स.१९६४, पृ.१८८

४. रुबरु मुलाकात पंचाल मीनाबेन मूलीबेन सार्वजनिक पुस्तकालय, दिनांक : २२-०५-२०१३

५. पूर्वोक्त, स्मृतिग्रंथ, पृ.१२

डा. मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.